| अधोपपातकानि ।                                    | प्रायस्थित्तानि ।   | तद्याती<br>धेनुदानम्।                 | तद्यक्ती<br>चूर्यीदानम्।   | हिचगा।   |
|--|---|---------------------------------------|--|--|
| बास्त्र वदानध्ययनं यज्ञा-                        | चैमासिकं गोवतम्।  | १२ धेनव:।                             | ३६ कार्यापणाः।   | १ वृष:। १० गाव:। स्रम्रातं   |
| कर्गं पुत्रानुत्पादनच।                           | (F)   | 1477 NO 578                           | FIRST  | १५ कार्घापणाः।   |
| यना श्रमित्वम् ।                                 | संवत्सरे प्राचापत्यम्।  | १ धेतु:।                              | ३ कार्घापणाः।  | यथाप्रस्ति।  |
|  | वर्षेद्वये अतिक्षक्रम्।   | ३ धेनव:।                              | ध कार्यापणाः।  | Marketin and the Company of the Comp |
|  | वधनये कच्छातिकच्छम्।  | ६ धेनवः।                              | १८ कार्घापणाः।   | यथाशक्ति।  |
|  |   |                                       |  |  |
|  | चत जहें चान्त्राययम्।   | साईसप्तधेन्वसम्भ-<br>वात् = धेनवः।    | २२॥० कार्घा-<br>पर्याः।  | यथाभ्रत्ति।  |
| स्र्योदयास्तकालयोः प्रयनम्।                      | यष्टराचरणी स्नानम्।   |                                       |  | 图1. 1.   |
|  | अभ्यासे प्राचापत्यम्।   | १ धेनु:।                              | ३ कार्घापणाः।  | यथाप्रिक्ति।   |
| चिचारियः सन्धादीनामति-                           | अशोशियो निरन्तरं सप्तराजसकर्यी अव-  | साई सप्तधेन्वसम्भ-                    | २२॥० कार्घा-   | प्रावः। अग्रसी ४०१   |
| क्रमः। ऋहिना ऋकीत्मना-<br>कर्यं भेच्यचयाकरयायाः। | कीर्यिवतम्। तत्तु खरचर्ममपरिधान-<br>पूर्वकाषास्मासिकं ब्रह्महत्वावतम्।  | वातु प धेनव:।                         | पया:।  | कार्वापणाः।  |
|  | एतदूने जनं अधिके अधिकम्।  | 1599                                  | Control of the   |  |
| प्रतातरग्रहकास्य सन्त्रास्त्रानः-                | दिनैकनिखिक्रियातिपाते एकाचीपवासः।   |                                       | ६ रिक्तिकरजतम्   | । यथाप्रति।  |
| हिन्दिनत्यक्रियापातः ।                           | दिनवयक्रियातिपाते तक्ता हु म्।  | P William                             | १॥० काभापगः।   | यथाभूति।   |
|  |   | 1-31 6 7 1                            | the same of the sa |  |
|  | वर्षेकानिवाकियातिपाते एकदिनक्रियाति-  | translation and                       | र पल इतीलक-  | यथाप्रस्ति।  |
|  | पातप्रायिखत्तानुसर्थीन प्रायिखत्तम्।  |                                       | ४ मायकसित-   |  |
|  |   |                                       | रचतम्।   |  |
| (दबतिरिक्तायाच्ययाचनम्।                          |   | 0                                     | ۰  | 0  |
| व्ययाच्याच निन्दितप्रति-                         | अभ्यासे सहस्राधिकं चान्त्रावर्णं वा।  | सार्ह्वसप्तधन्वसस्स-                  | २२॥० कार्घा-   | यथाप्रस्ति ।   |
| यहादिना निन्दितनास्त्रणा-<br>हय:।                | दिचयात्यागाच पूती भवति।   | वात् = धेनव:।                         | पणाः।  |  |
| इयाजनस।  | लोभादिना याजने अर्जितसुक्ताविध्रष्टधन-  | साह सप्तधेन्वसस्भ-                    | २२॥० कार्घा  | यथाग्रस्ति।  |
|  | खागाधनने प्रचेपपूर्वनं जक्षचारियो<br>दानपूर्वनं वा चान्द्राययं पुनक्षनय-<br>नच्च। व्यचारनवयत्रक्षस्वनचैनापा-<br>नच्च। यतदप्रक्तौ तहनं परित्वव्य<br>निंप्रतृपुरायाः प्रदातवाः। | बात् = धेनव: ।                        | मखाः।  |  |
|  | क्के हारतुप्रसङ्गादिना याजने ह्रवायाग-<br>पूर्व्वकं प्राजापत्यम् ।<br>अज्ञानतः प्रायायामसङ्ख्यम् ।  | १ घेडु:।                              | ३ कार्घापणाः।  | यथाप्रक्ति ।   |
| स्दप्रतियहः।                                     | सक्तयतियहे जिसहस्रगायत्रीचप:।   |                                       |  |  |
|  | ख्यासे चान्त्रायणम्।<br>रतच दयलागपूर्वकं कार्यम्।   | सार्ह्यप्रधेन्वसम्भ-<br>वात् = धेनवः। | २२॥० कार्घा-<br>पर्याः।  | यथाभ्रत्ति ।   |
| उच्छा खनि चित्रयष्ट्रपतिप्रति-<br>यद्दः ।        | षष्ठे काले चीराधनं मार्यकं चलवायः<br>प्रचुरतरिङ्गतर्पण्यः । साक्षीपवासेने-<br>वास्य सङ्कलनमः ।  | १५ धेनवः।<br>स्टलकः क्यूना            | ध्प्रकार्घापणाः।   | यथाभ्रक्ति।  |
| प्रयान्यः। स च<br>अयाचितपुष्यफलप्राक्षसण-        | ज्ञानादण्चलारिशहाराभ्यासात् हादभ्<br>वाधिकवतम्।   | १८० धेनव:।                            | ५४०कार्घापटाः।   | १०० गाव:। अग्रती १००<br>कार्घापणा:।  |
| कालधान्यपयोमांसद्धिश-                            | अज्ञानात् द्विरभ्यासे तप्तक्षक्रम्।   | ८ धेनवः।                              | १२ काषापणाः।   | यथाप्रस्ति।  |
| यगिचकुश्गत्यम्यिमस्या-                           | ज्ञानात् दिरभ्यासे चान्द्रायणम् ।   | सार्हेसप्रधेन्त्रसम्भ-                |  |  |
|  | Merch tacking at strange 1  |                                       | २२॥० कार्षा-   | यथाप्रक्ति।  |
| दौतरविषय:।                                       |   | वात् = धेनवः।                         | पगाः।  |  |
| चाख्डालप्रतियह: ।                                | यज्ञानात् यथचत्वारि ग्रहाराभ्यासात्<br>द्वादग्रवाधिकव्रतम्।   | १८० धेनवः।                            | प्रः कार्घाः<br>पणाः।  | १०० गाव:। अप्रक्ती १००<br>कार्थापणा:।  |
|  | यज्ञागात् सङातृष्ठते तप्रक्षच्छ्म्।   | ८ धेनवः।                              | १२ कार्घापणाः।   | यथाप्रस्ति।  |
|  | कानात् सकत्कते चान्द्राययम्।  | साईसप्तधेन्वसम्भ-                     | २२॥० कार्या-   | यथाप्रक्ति।  |
|  |   | वात् ८ धेनवः।                         | पया:।  | Fig.   |
| तितप्रतियद्यः                                    | चानात् सकत्कते चान्द्रायणम्।  | साहंसप्रधेन्वसम्भ-                    | २२॥० कार्घा-   | यथाप्रस्ति।  |
|  | मज्ञानात्तद्वभ्।  | वात् = धेनवः ।                        | पकाः।  |  |